रसमानस

हिंदी भक्तिगीत

कवि बालकृष्ण भगवंत बोरकर

मैं तो फकिर कलंदर हूँ

मैं तो फकिर कलंदर हूँ

भंवता हूँ मैं भवरस नदियां
दस दिकयां की सबही सदियां
कब सुखिया कब दुखिया
तो भी खीर समिंदर हूँ

हालत मेरी धून दिवानी
मुहबत से खिन खिन कुरबानी
जोग किये बिन भोगबिमुख मैं
सुक जोगिंदर हूँ

बादल आवे बादल जावे
आंतरज्योति कौन बुझावे
गगन निवासी मैं अविनासी
आतम चंदर हूँ

उसको सहज मिले रे साई

जो कोई चितसुध होई
उसको सहज मिले रे साई

जिसको दुनिया नहीं पराई
दीख परे सो भाई
एक दिले मुस्कान मिले तो
दसलख रतन कमाई

पास बुराई आते जिसकी
बढती जाय भलाई
मुखरे अंखियनकी वरशासे
मिटती दरद दुराई

जलबत निरमल सीतल निच्छल
जिस दिल की गहराई
उस तीरथमें गगन चांद की
जगमगती परछाई

सजन बने तो इसी जनम में
मुगती पाय लुगाई
सुन ले प्यारे सांज सवेरे
कहते गैब गुसांई

गजब राज रे तेरा मालिक

गजब राज रे तेरा मालिक सचही लाजबाब
बकायदा सब कानून तेरा कौन लगावे हिसाब

पतिवरताके घर अंधेरा बुझबुझ जाती बत्ती
रंडी के पैंखाने पर भी ठंडी चंदर ज्योति

मूरख होते हौदा चढते गिनते जाते मुजरे
विद्यामंडित पंडित सारे डण्डे खाकर गुजरे

नीयतसे जो चलता वो ही फिरता भूखा नंगा
बेईमानके न्हानीघर में बहती रहती गंगा

अकल गुंग हो जाती मेरी अजब तमाशा तेरा
मालिक? ये कब मिट जायेगा, होगा लख्ख सबेरा

मीठा तेरा नाम

बचपन से जी! सुनता आया
मीठा तेरा नाम
कीरत तेरी तू भगतन का
आठै पार गुलाम
कबीरजी के बुने दुपट्टे
जनिके चावल पीसे
आफत आयी तब दामा के
तूने भर दिये पैसे
ग्यानदेव के लिए गवाया
भैंसा के मुख बेदा
हुए पुण्ड के लिए ईंट पर
जुग अट्ठाइस पैदा
कंधेपरसे एकनाथ-घर
नित पहुंचाया पानी
मौकेपर पहनायी तूने
व्याकुल पांडवरानी
परेशान जब सेवक तेरा
तू उसका अभिमानी
गंवार अनपढ ग्वाला को तो
दिया अमोलिक बानी

अपनी प्रीत पुरानी

अपनी प्रीत पुरानी बालम

तुम राजा, मैं रानी
तुम ब्रिजनंदन, मैं सुमवंदन
तुम चंदन मैं पानी

तुम बिंबाधर मैं बनवन्सी
तुम रसमानस मैं कलहंसी
नटरंगी तुम सुमनविलासी
मैं तो गंधदिवानी

तुम चंदा मैं रात नशीली
तुम रागा मैं चीज रसीली
तुम कविजी मैं घायल कोयल
तुम दरसन मैं बानी

अगनसिखा तुम मैं घीधारा
उरुध-गती मैं तुम धुरुतारा
सद्गतिदानी तिखन सूल तुम
मैं हरदम कुरबानी

इन बातोंपर रखा भरोसा
दुविधा कभी न पायी
इसीलिये क्यो मेरे घर तू
कष्ट उठाते साई!

देखो दिल में जलती बत्ती

देखो दिल में जलती बत्ती
लख चौऱ्याशी अत्तर की
अंधे होकर क्यूं पूजते हो
सूरत मूरत फत्तर की

तिरथ बिरथ क्यूं करते फिरते
नाहक तुम भटका भटकी
फिजूल चर्चा वेद शास्त्र की
गहरी माया घटमठकी

अंखियनमें है गंगाजमुना
ऐसी किरपा गिरिधर की
तीरथ नहि करूणा से बढिया
पीरत है मुगती नर की

छबी खडी है सुरत बडी है
कोटिचंद्र चिरसुंदर की
उन्हे रिझावो मन बहलावो
बात सुनो बे अंदर की

दिल चाहे सो गावो

अपनी तार सितार बजावो
दिल चाहे सो गावो
इस जग की मरजी इतराजी
उस धुन में भूल जावो

सूर जमाते भान गमाते
रोम रोम सुलगावो
डार डार के पान फूल में
फागुन अगन लगावो

इस मिट्टी के कनकन में से
सुगंध पात उगावो
खिन्न अकिंचन छांव छांव में
कंचन दीप जगावो

वरद सूरसे दीन जगत की
अखखय प्यास बुझावो
गाते गाते सुख बरसाते
सात गगन उड जावो

गुरू गानी गुरू गानी

गुरू गानी गुरू गानी
गावत धून बिरानी

नेमी धर्मी पंडित भर्मो ऋषिमुनि जोगी ध्यानी
सब ने रसबिन कसके खायी अपनी भली जवानी
गुरू ने छांडी पूजा पठनी जइं बैठे तइं दानी
गाते गाते दिल से देते गंगाजी का पानी

दो कुत्तों की बिगडी गंठ बन कर ली उन्हे समानी
जो पहुंचे सो लज्जत जाने, परखे मरम निशानी
परखी मख्खी गगन चुवे झट, नर से वही सहानी
हे सिख! सिख लो अचरज दिख लो गुरु की गैब कहानी

१५/२/७१

गले मिलो अब मोर

चिडिया गावै दिल खिल जावै
असि दी तुमने भोर
तन थकने पर इन पलकों पर
दीजे सांज विभोर

खूब रमा हूँ खूब घुमा हूँ
यह मयमहल बिलोर
इक परकाश बना रंगीला
गीला सावन-भोर

तृपित हृदय से बहुत सुलाया
जियरा रस-हिंडौर
आज लुभावन चाहत हूं मैं
थिर कंधे का जोर

देख रही हूं बाट घाट पर
तेरी तरकी ओर
आवो आवो आवो साजन
गले मिलो अब मोर

२०/२/७१

साधो सहज समाध

अवधू, साधो सहज समाध

गंध पवनबिन, चीत नयनबिन
मिलत अन्न बिन स्वाद

सुखबिन हर्षा, तपविन वर्षा
साद बिना पडसाद
सबजल तीरथ, जग हरिमूरत
ज्योत जले परमाद

ज्योत मिले तो नहि निसिबासर
आतिश से संवाद
तृपति आस बिन, अमृत प्यास बिन
सतत सबद बिन नाद

२१/२/७१

तुम गिरिधर मैं तेरी गोपी

एक जनम में मैं थी गोपी
तुम थे यदुवर अधर-मद्यपी
मैं थी दासी ब्रिजवन वासी
तुम थे नटवर कला विलासी

तुम तब थे जग मोहन बेनू
मैं तेरी स्वर-घायल धेनू
कसके जो मैं माखन पाया
मांग मांग के तुमने खाया

मुख तेरा दिखने से धाई
मुझ में तुझ में भी न समायी
जल में जब कतियाने काटी
तुमने झट कर ली उफराटी

जो होती थी काली पीली
बन गइ तुझसम नीली नीली
तब से जान तुम्ही पर सौपी
तुम गिरिधर मैं तेरी गोपी

२३/२/७१

एक नाम है बाकी

पुरब जनम से अमल मस्त हम
पीके ही यहँ आये
सुरमीले आंखों में सपने
अमर लोग से लाये

जहँ जाऊँ तहँ साथ हमारे
मस्ताना मैखाना
बैठे तित दरबार हमारा
सब को नित परवाना

किताब न चहें, न चहें प्याला,
सोन सुराई, साकी
जानो भाई मेहरबांका
एक नाम है बाकी

२३/२/७१

टेढा है ब्यौहार तुम्हारा

टेढा है ब्यौहार तुम्हारा जो सीधा सो जाने
पंडिता पांडे मुल्ला काझी माने या ना माने

मुसीबतों में मुहबत तेरी आफत में मुरख परशा
संपत में है छिपा हलाहल दुखमें रस की बरशा
दोगे तब लेवोगे पूरा लेता घन सम दानी
प्यासा जो वह डुब जाता है तृपित तिरेगा पानी

जो खोजे सो रान फँसेगा सोवे देखे बाती
फिरता जो आराम अकेला तुम ही उसका साथी
जानू मैं यह आदत तेरी मुझे फिकीर न चिंता
बहुत पुकारा वरम तुम्हारा पर कोई नहिं सुनता

२५/२/७१

गुपित गुफामें दिया लग गया

गुपित गुफा में दिया लग गया
रात बिये परभाती
दशदिशमंडल नया उजेरा
कन कन कंचनबाती

कँवल कलापित पवन सुसीतल
बन बन परिमल लागे
धरनी के हर अंचल में से
अमृत-झरना जागे

नील गगन की गाय बियाली
लखमुख चंदनी धारा
वज्रसेकसे तुरित जगमगा
सब संसार-पसारा

रजत कँवल सम दिल खिलने पर
त्रिभुवन मखिया होई
हँसा सुखिया यह गुज जाने
अन्य न जाने कोई

२६/२/७१

खिन खिन कर हरि सुमरन रे

खिन खिन कर हरि सुमरन रे

फूल बिना बन प्राण बिना तन
वैसाही मनहरि बिन रे
धन जोबन का गरब प्रिया
सुल्तानों का कहां पता?

यह जग सब मिट्टी का नाटक
सच तो हरि करूणाघन रे
खोई जाता जाता पाता
संकट में सच वो ही त्राता

वो ही रास्ता वो उजियाला
वो ही बानी दरसन रे
हरि गावे तो हरि घर आवे
गिर जावे तो हृदय लगावे

वोही साथी सदय संगाती
संतत भगत परायन रे

२०/६/८०

आज मेरे घर साजन आया

आज मेरे घर साजन आया
अंगन में ही त्रिभुवन पाया

दीप लगे घर रवि शशि तारे
दार मिले स्थल काल किनारे
मैं भूली श्वासोंपर झूली
तन में मन न समाया

भूली मैं जन रीत बगावत
दोनों घर की इज्जत इभ्रत
लांघ गयी इस जग की सीमा
अ-रज गगन अपनाया

साजन सौपा सजनी सौंपी
हरि गोपी में हरि में गोपी
अद्भुत युति में अतिद्रुत गति में
मैने मुझे मिटाया

२१/६/८०

दूर है मंझिल

दूर है मंझिल, घाट बिकट है
फिर भी बाबा चलना है
गिरने पर भी फिर उठना है
ठाकुरजी से मिलना है

दिया नहीं तो धीरज धर तूं
अंखियन मेंही ज्योति है
पदतल से जो धावत धारा
वोही मनतल धोती है

तन की पीडा मन की सीढी
धीरे धीरे चढना है
ठाकुरजीका सुनत बुलावा
उनकी ओर ही बढना है

जनम जनम की याद खोलकर
उनपर लगन लगाना है
घायल का स्तर वेग दिवाना
जियरा मरकर गाना है

सुननेवाला कोई नहीं हो
ठाकुरजी तो सुनता है
जागत देखत राह तुम्हारी
पगपग तेरा गिनता है

१४/१०/८२

उड जा पंछी

उड जा पंछी, गगन पकड लो
पत्ते पीले होत रे
आया फागुन डगमग आसन
मूल में जागी मौत रे

इन साखोंका नहीं भरोसा
फिजुल यहां की आस रे
जिया परिन्दा उन्हें गगनविन
अन्य न अभय निवारा रे

सहज वहां छूटती अहंता
माया ममता खंत रे
नित्य निरंतर अंतरतमका
चित्सुखवंत वसंत रे

१८/१०/८२

सुमिर मन संत न मन बिसराम

सुबह श्याम घनश्याम
सुमिर मन संत न मन बिसराम

चिंता नाशन हित चिंतामणि
गरल शमन श्रीराम, सुमिर मन

नाम सुमिर मन अविरत निसिदिन
मुनिजन कंठ ललाम, सुमिर मन

नाम परम सुखधाम अमर, मन
सुमिरत वन निसकाम, सुमिर मन

१९/१०/८२